यथार्थ (reality)

एक महिला रोगी को उसके घर वाले बेहोशी की हालत में अस्पताल में लाए। डॉक्टर ने जाँच कर के बताया कि उसके दिमाग में इन्फ़ैक्शन से सूजन हो गई है। मरीज को सात दिन भरती रखा गया। काफ़ी महंगी महंगी दवाए दी गईं। मरीज को कुछ होश तो आया पर वह बोल बिलकुल नहीं रही थी। इधर उधर देखती थी पर यह नहीं लगता था कि वह किसी को पहचान रही है। उस के घर वाले और अधिक पैसा खर्च करने में समर्थ नहीं थे अतः वे उस की छुट्टी करा के दवा लिखवा कर उसे घर ले गए।

घर पहुँच कर उस का हाल थोड़ा सा सुधरा। खिलाने पर खाना खा लेती थी, पर उस की मानसिक हालत लगभग वैसी ही रही। तब गाँव के लोगों ने कहा कि इस को कोई ऊपरी हवा का चक्कर है। उसे किसी सयाने को दिखाया गया। उसने कुछ दवा खिला कर उल्टी कराई जिसमें उल्लू का दाँत और गिलहरी का नाखून निकले (वास्तव में यह सब हाथ की सफ़ाई होती है)। सयाने ने कुछ तन्त्र मन्त्र पढ़ा और कुछ दवा खाने को दी। कुल पचास रुपये लिए। थोड़े दिनों में महिला बिल्कुल ठीक हो गई। गाँव वालों को पक्का विश्वास हो गया कि वे शहर में हजारों रुपया बेकार लुटा आये उसे तो केवल ऊपरी हवा का चक्कर था।

ऐसे उदाहरणों में वास्तविकता क्या होती है यह थोड़ा सोचने का विषय है। उस महिला को वाइरल एन्केफ़ेलाइटिस अर्थात वाइरस द्वारा दिमाग का इन्फ़ैक्शन नाम की बीमारी थी। इस प्रकार के इन्फ़ैक्शन करने वाले अधिकतर वाइरस किसी दवा से नहीं मरते हैं। वे शरीर में कुछ समय के लिए इन्फ़ैक्शन करते हैं व फिर शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता उन को खत्म कर देती है। यदि इन्फ़ैक्शन बहुत अधिक होता है तो शरीर की प्रतिरोध क्षमता काम नहीं कर पाती और मरीज़ की मृत्यु हो सकती है या उसे लकवा इत्यादि हो सकता है। दिमाग की जिन कोशिकाओं के काम न करने से लकवे का असर होता है उन में से कुछ कोशिकाएं स्थायी रूप से नष्ट हो सकती हैं व कुछ कोशिकाएं दोबारा काम करना आरम्भ कर देती हैं। यदि कोशिकाएं दोबारा काम करना आरम्भ कर दें तो मरीज लगभग ठीक भी हो सकता है पर इस में कितना समय लगेगा है यह नहीं बताया जा सकता।

जिस समय मरीज को बीमारी आरम्भ होती है उस समय उस को ग्लुकोज़ की बोतलें, महंगी ऐंटीबायोटिक दवाएं, दिमाग की सूजन कम करने की दवाएं व अन्य दवाएं देनी होती हैं। ये सब इलाज करने के बाद भी मरीज़ के बचने या बिलकुल ठीक होने की कोई गारण्टी नहीं होती। दूसरी ओर यदि उस समय कोई दवा न दी जाए तो भी बहुत से मरीज़ प्राकृतिक रूप से ही बच सकते हैं।

चिकित्सा विज्ञान के नियमों के अनुसार डॉक्टर का कर्तव्य यह होता है कि वह जिन बीमारियों की संभावना हो सकती है उन के लिए हर संभव दवा दे कर मरीज़ की जान बचाने का प्रयास करे। चिकित्सा विज्ञान के विषय में कुछ भी न जानने वाले भोले भाले लोगों को यह सब समझा पाना बहुत कठिन कार्य है। झोला छाप और झाड़ फूँक वाले लोगों को बहका कर मरीज़ का कुछ भी इलाज करते हैं। कुछ ठग लोग तो गारंटी भी ले लेते हैं हालांकि इस गारंटी का कोई अर्थ नहीं होता। जो मरीज़ अपने आप ठीक हो जाते हैं, उन्हीं का क्रेडिट ये लोग ले लेते हैं।